|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 27. Dezember | | |
| **Fest des Hl. Johannes,** Apostel und Evangelist | | |
| Lesung.: 1 Joh 1,1-4; Evangelium.: Joh 20,2-8 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 251 | Jauchzet, ihr Himmel |
|  | GL 247, 1-4 | Lobt Gott, ihr Christen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 155 | Kyrie |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 250, 1+3 | Engel auf den Feldern singen |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 97, 1-2.5-6.11-12 | |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 255 | Das Wort wurde Fleisch |
|  | oder |  |
|  | GL 730, 1 | Seid nun fröhlich |
|  |  |  |
|  |  | |
| Halleluja-Ruf: | GL 244 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Dich, Gott, loben wir, dich, Herr, preisen wir;* | |
|  | *dich lobt der glorreiche Chor der Apostel.* | |
|  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 729 | O Gottes eingeborner Sohn |
|  | GL 737, 1-3 | Den Weltenheiland |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 239, 1-3 | Zu Bethlehem geboren |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 736 | Singen wir mit Fröhlichkeit |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 734 | Singt, Völker, singt |